International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 4; April 2016; Page No. 241-243

अग्नि देवता एवं होम का अध्ययन

[1] डॉ. वेद प्रकाश मिश्र, [2] कृष्ण कुमार भास्कर

[1] संस्कृत–विभागाध्यक्ष, एसोशिएट प्रोफेसर, डॉ. सी.वी.रामन् वि.वि. करगीरोड कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)
[2] सहायक प्राध्यापक, डॉ. सी.वी.रामन् वि.वि. करगीरोड कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश
समस्त शुभ कार्यों में अग्निदेव की उपस्थिति अनिवार्य मानी गई हैं, शास्त्रों में अग्नि देव के वास का विधान बताया गया है, अग्नि देवताओं का मुख है शास्त्रानुसार अग्निदेव के तीन स्थान बताये गये हैं–1. स्वर्ग 2. पाताल 3. भूमि तथा इसी के अनुसार अग्निदेव के पूजा का विधान बताया गया हैं। मनुष्य, देवताओं, असुरों, एवं सभी जीवमात्र के समस्त कर्मो का साक्षी अग्नि देव को माना जाता हैं। सभी कार्य उनके संरक्षण में रहने के कारण बिना किसी बाधा के संपूर्ण हो जाते है। अग्निदेवता पृथिवी स्थानीय है। ऋग्वेद के पुरूष सूक्त के अनुसार अग्नि की उत्पत्ति विराटपुरूष के मुख से हुई है।

मूल शब्द: अग्निवास, अग्नि का स्वरूप, अग्नि के हवनीय स्थान, नवग्रहों की अग्नि

मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च।
वैदिक साहित्य के अनुसार इन्द्र देवता के बाद अग्नि देवता का प्रमुख स्थान है ऋग्वेद में 200 सूक्तों में इनकी स्तुति की गई है।

अग्नि देवता
यह सर्वविदित है कि क्षिति, जल, पावक, गगन एवं समीर ये पंचमहाभूत सृष्टि संरचना में मुख्य कारण है। सृष्टि में कोई ऐसा प्राणी नहीं है जिसके शरीर में पिण्ड संरचना में उक्त पंचतत्वों का योगदान न हो। शरीरान्त के बाद ये पंचतत्व पंच महाभूतों में विलीन हो जाता है। यज्ञयागादि कर्म में अग्नि का पूजन एवं उसके ध्यान में बताया गया है कि अग्नि देव के सात हाथ, चार सींग, सात जिह्वा दो सिर, और तीन पैर है। उस अग्निदेव के दायें पार्श्व में स्वाहा तथा बायें पार्श्व में स्वधा देवी विराजमान है। अग्निदेव का शाण्डिल्य गोत्र भूमि माता, वरूण पिता तथा ध्वजा में मेष अंकित है।

1. अग्निवास

''शैका तिथिर्वारयुता कृताप्ठप्ता
शेषे गणेउ भ्रे भुवि वहिनवासः
सौरख्याप होमे राशि। युग्म2 शेषे
प्राणार्थ नाशो दिवि भूतले च ।।''[1]

जिस दिन अग्नि वास का मुहूर्त प्राप्त होता हैं। वहां तक की तिथि को शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से तिथि संख्या गिनकर उसे और वार संख्या गिनकर जोड दे फिर एक और जोडे. फिर उसमें चार का भाग दे यदि 3 और 0 बचें तो अग्नि का वास भूमि में रहता है, जिसमें हवन से सुःख की प्रप्ति होती हैं। यदि 1 शेष हो हो अग्नि का वास स्वर्ग में रहता हैं और 2 शेष रहे तो अग्नि का वास पाताल में रहता है। अतः उस समय हवन करने से कर्ता का मरण और धन का नाश होता है। भूलोक में अग्नि का वास रहने पर ही हवन करना चाहिये अन्यथा ऐसा नही करने पर दोष लग जाता है।

2. अग्नि का स्वरूप

सूत्र–तिथि संख्या +एक +वार संख्या = कुलसंख्या
चार = शेष

फल 1 = स्वर्ग में प्राण संकट
2 = पाताल में अर्थ संकट
0/3 पृथ्वी में सुख प्रदान

सकाम या कामानुसार कार्यो की सिद्धि हेतु ये विधि परम आवश्यक हैं किन्तु निस्काम भक्त कभी भी अग्नि में हवन कर सकता हैं शास्त्रानुगत ही हमें अग्निवास का विचार करके ही होम कार्य करना चाहिए जिससे स्वयं का तथा संसार का कल्याण हो सके, क्योंकि यज्ञ करने से सम्पूर्ण समाज, देश, एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्य का कल्याण होता है। यजमानों को प्रज्वलित अग्नि में ही होम करना चाहिए जो व्यक्ति तेजहीन अग्नि में तथा अंगारहीन अग्नि में आहुति देता है। वह मदाग्नि रोग से दुःखी तथा दरिद्रता को प्राप्त होता है। अतः प्रज्वलित अग्नि में ही हवन करना सर्वथा उचित है।

3. अग्नि के हवनीय स्थान
यज्ञ की विधि बडी. महत्वपूर्ण है। सूक्ष्मता पूर्वक यज्ञ करने पर साधक अपनी सभी मनोकामनाओं को आसानी से पूरा कर लेता है। यज्ञ संसार की नाभि स्थान माना जाता हैं यज्ञ में अनेकों देवता समाहित रहते है किन्तु अग्नि ही सर्वप्रधान व श्रेष्ठ माने जाते है। ये ही हव्य देवताओं तक पहुँचाने का कार्य करते है।
अग्नि में हवनीय स्थान भी होते है, जिसमें जिह्वा में आहुति डालने से ही अग्नि को प्राप्त होती हैं अन्यथा अग्नि रूष्ट हो जाती हैं।

''सर्वकार्य प्रसिद्धयर्थ जिह्वायां तत्र होमयेत्।
चक्षुः कर्णादिकं ज्ञात्वा होमयोद्देशिकोन्तमः।।[2]
अग्निकर्णौ हुतं यस्तु कुर्याच्चेद् व्याधितो भयम।
नासिकायां मंहद्दुःखं चक्षुषोनाशनं भवेत्।।''[3]

मनोकामना की सिद्धि के लिए अग्नि की जिह्वा में होम करना चाहिए। श्रेष्ठ आचार्य नेत्र, कर्ण, नाक, सिर, आदि की पहचान कर होम करते हैं नासिका में होम करने से कष्ट नेत्रों में करने से विनाश होता है। इस लिए जिह्वा में हवन करना चाहिए। जहां काष्ठ वहां अग्नि के कान जहॉ धुंआ है वहां अग्नि की नासिका कही गई है जहां यह अग्नि कम प्रज्जवलित है वह नेत्र कहा गया है। जहां भस्म है वहां सिर कहा गया है और जहां अग्नि

ज्वाला–युक्त है वहा अग्नि का जिह्वा कही गई है। अग्नि की उपासना से समृद्धि और आयु मे वृद्धि होती है।
अग्नि समस्त उपद्रवों को शान्त करने वाले है। अग्नि का सभी देवताओं से सम्बन्ध होता है। अतः अग्नि समस्त देवताओं का आशीर्वाद अपने भक्तों को प्रदान करते है–

''वहनेः शिरशि नाशायां श्रोत्रेस्वक्षिषु वा तथा
जुहुयांच्चेन्तदा क्षिप्रं तदगङगानि विनाशयेत् ।।''[4]

अग्नि के सिर में, नासिका में, कानों में, नेत्रों में यदि हवन करे तो वह हवन मनुष्य के उन–उन अंगों को विनष्ट कर देता है।
अग्नि देवता के हवनीय स्थानों पर विचार अत्यन्त आवश्यक हैं
क्योकि जिस स्थान में अग्नि का स्थापना होना हैं वहा सुव्यवस्थित रूप से अग्नि की स्थापना के लिए उचित शुद्ध व समतल भूमि का चयन होना चाहिए । विधिवत मण्डप का निर्माण और शुद्ध पुण्यमय बगीचे, मंदिर, जलाशय के तट, नदी तट या सिन्धुतट में यज्ञ का आयोजन होना चाहिए। शुद्धि एवं पवित्रता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। यदि हम घर में हवन कर रहे है या साधारण अग्निहोत्र या होम कर रहे है फिर भी हमें मिट्टी का कुण्ड बनाकर या स्तन्डिल बनाकर होम करना चाहिए। होम की समिधा पवित्र स्थान पर रखना चाहिए। हवन की सभी सामाग्री पूर्व या उत्तर दिशा की ओर रहनी चाहिए। हमेशा शुद्ध एवं पवित्र मन से ही अग्नि की पूजा करनी चाहिए। अग्नि की स्थापना हमेशा अग्नि कोण में ही करनी चाहिए। अग्नि स्थापना के पहले गाय के गोबर से भूमि एवं कुण्ड. को लीपकर, पंचगव्य छिडक कर , देवताओं का आवाह्न एवं पूजन करके यज्ञपात्रों की स्थापना करके अन्त में अग्नि की स्थापना करनी चाहिए। नियमित अग्निहोत्र में घृताहुति प्रदान करना चाहिए और स्वाहा शब्द ध्वनि के साथ होम करना चाहिए क्योंकि स्वाहा अग्नि देवता की पत्नी है और उनके बिना अग्नि देव भोजन नहीं करते अतः स्वाहा का उच्चारण करने पर ही अग्निदेव हवि को ग्रहण करते है। अतः सावधानीपूर्वक हवनीय स्थान का विचार करके जो हवन करता है उसको मनवांछित फल, वरदान अग्नि देवता प्रदान करते है।

4. नवग्रहों की अग्नि

सम्पूर्ण जगत में अग्निदेव के समाहित रहने के कारण ही ये संसार अनेको ज्योति के प्रकाश से प्रकाशित हो रहा है। अग्नि देवता ही संपूर्ण संसार को प्रकाशित कर रहे हैं यहां तक सूर्य एवं चन्द्र के रूप में अग्नि देव ही दिन और रात्रि में संसार को प्रकाश प्रदान कर रहे है।
अतः समस्त सृष्टि एवं ब्रह्माण्ड अग्निमय है तो फिर नवग्रह और तारामण्डल एवं आकाश कैसे अधूरे रह सकते है। सभी ग्रहों में ऊर्जा के रूप में अग्निदेव ही समांए हुए है और उन्हें ऊर्जा प्रदान कर रहे है। ग्रहों की गति, चमक, ऊर्जा, कार्य सब अग्नि देव की समाहिता से ही है अग्नि सम्पूर्ण विश्व के कण–कण में व्याप्त हैं।
जब रावण ने सभी ग्रहों को बंदी बनाकर कारागार में कैद कर लिया था तब हनुमान के माध्यम से अग्नि देव ने लंका दहन करके बंधन मुक्त किया था। अग्नि देव ने रावण की सोने की लंका को जला दिया था। अग्निदेव ही शिवतेज धारण कर कार्तिकेय को प्रकट करके तारकासुर का नाश किया था। अग्निदेव ने ही भगवान शिव के नेत्र से प्रकट होकर कामदेव को भस्म कर दिया था । होलिका को भी भस्म कर दिया था। अग्निदेव अपने क्रोध को बढाकर दुष्टों को ग्रहों एवं देवताओं के माध्यम से दंड देते है। अग्निदेव ही शिव के अग्निमय त्रिशूल में, ब्रह्माजी के ब्रह्मास्त्र में, श्रीनारायण के चक्र में वास करते हैं तथा समय –समय पर दुष्टों का विनाश करते है।
शास्त्र का मत है कि अलग–अलग ग्रहों के लिए अलग–अलग अग्नि के रूपों को बताया गया है और प्रत्येक ग्रह में अलग–अलग नाम वाली अग्नि का वास बताया गया हैः–

''आदित्ये कपिलो नाम पिंगलः सोम उच्यते।
धूमकेतुस्था भौमे जाठरोऽग्निर्बुधे स्मृतः।।''[5]
वृहस्पतो शिखी नाम शुक्रे भवति हाटकः।
शनैश्चरे महातेजा राहुकेत्वोर्हुताशनः ।।''[6]

सभी नवग्रहों में अग्निदेव अलग–अलग नामों में विराजमान हैः–

1) सूर्य में कपिल नामक अग्नि का वास है जो अत्यंत तेज से युक्त है। इसकी ऊर्जा अत्यन्त असहनीय है फिर भी भक्तों के कल्याण के लिए ये अग्नि प्रातः कालीन अपनी कोमल ऊर्जा प्रदान कर भक्तों को तेजोमय स्वरूप एवं भव्यता प्रदान करती है।
2) चन्द्रमा में जो अग्नि है उसका नाम पिङगल है। ये पिङगल वर्णा है और चन्द्रमा को ऊर्जा प्रदान कर प्रकाशित करती है। ये सौम्य स्वरूप एवं शान्तिदायक है इनका तेज सहनीय है किन्तु असुरों के तेज को ये हरण करने वाली है ये अग्नि सतोगुणीं है इनकी प्रार्थना से शांति एवं शीतलता का आभास होता है। ये घोर रात्रि को प्रकाशित करने वाली कल्याणकारी है अतः इन्ही गुणों के कारण ये चन्द्रमा में निवास करती है और निरन्तर गतिमान रहती है।
3) मंगल में जो अग्निवास है उसका नाम धूमकेतू है । इसका वर्ण लाल है और धूम्र युक्त है। ये अग्नि बहुत ही तीव्रगामी एवं अत्यंत क्रोध वाली है। इसका तेज असहनीय है। दुष्टों को भस्म करने वाली है। ये रूष्ट होने पर अनेक रोग प्रदान करती है। प्रसन्न होने पर पराक्रम, शक्ति, सौभाग्य एवं उन्नति प्रदान करने वाली है।
4) बुध में वास करने वाली अग्नि का नाम 'जाठर' है ये तेज से युक्त और विकसित है। ये प्रसन्न होने पर विद्या , विवेक , बुद्धि, वाकपटुता एवं मित्रवृद्धि प्रदान करती है। ये भोजन पचाने में सहायक है इसका वास उदर में भी माना जाता है।
5) बृहस्पति ग्रह में निवासित अग्नि का नाम 'शिखी' हैं। इसका वर्ण पीला है ये हमेशा शुभता प्रदान करती है। ये विद्या, बुद्धि, विवेक को देने वाली है। इस के नाराज होने पर सिर के बाल झड़ जाते हैं। गले में खराबी रहती है। बिना कारण शिक्षा बाधित होती है। प्रसन्न होने पर मान सम्मान प्रदान करती है।
6) शुक्र में रहने वाली अग्नि का नाम ''हाटक'' है। ये रजोगुणी स्वभाव शुभ्र वर्ण वाली है। इनके रूष्ट होने पर कान्तिहीनता एवं निस्तेजता आती है प्रसन्न होने पर मान–सम्मान में वृद्धि एवं लोकप्रियता आती है।
7) शनि में रहने वाली अग्नि महातेज है। ये प्रचण्ड तेज वाली एवं भयंकार है। इनका वर्ण नील एवं कृष्ण धूम्र से युक्त है। ये अत्यन्त क्रूर एवं क्रोधी स्वभाव वाली है। इनके रूष्ट होने पर ग्रह कुपित हो जाते है। मकान गिर जाते है। विविध रोग होने लगते है। इनके प्रसन्न होने पर सुःख समृद्धि एवं मान–सम्मान और लोकप्रियता में वृद्धि होती है।
8) राहु तथा केतु की अग्नि को 'हुताशन' कहा गया है किन्तु कहीं–कहीं केतु में रोहित नाम वाली अग्नि का निवास माना गया है। ये धूम्रवर्णी है इनका वार अमोघ है। इन्हे अमरत्व की प्राप्ति हो चुकी है। इनके रूष्ट होने पर गुप्त रोग एवं संतान रोग उत्पन्न होते हैं। इनकी प्रसन्नता से पराक्रम, सुःख और यश में वृद्धि होती है। इनके नाम क्रमानुसार इस प्रकार है–

''कपिलः पिङगलों धूम्रकेतुर्जाठर नामकः,
शिखी च हटकश्चैव महातेजा हुताशनः।

''रोहितश्चैव विजेया रब्यादीनां हुताशनः।।''[7]

कपिल, पिङ्गल, धूम्रकेतु, जाठर, शिखी, हाटक, महातेज, हुताशन एवं रोहित ये सूर्यादि ग्रहों की अग्नि के नाम क्रमानुसार इस प्रकार कहे गये है।

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि जाज्वल्यमान अग्निदेव की वन्दना से 'धन–धान्य, सुःख–शान्ति प्राप्त होती है। तथा समस्त देवताओं के हविमार्ग को यथास्थान पहुँचा देते है इनकी कार्यन्त प्रज्ज्वलित स्वर्ण की भांति है तथा इनकी ज्वालाएं दसों दिशाओं में व्याप्त है यह पूर्ण रूप से अपने तेजोमय रूप में स्थित है। इस शोध पत्र के माध्यम से लोगों के जीवन में धर्म, सदाचार, सद्भावना, शुचिता, ईमानदारी, सत्यता आदि का आचरण कराना जिससे वे अपने परिवार, समाज एवं राष्ट्र के उत्कर्ष में सहायक बन सके।

संदर्भ सूची

1. मूहूर्तचिन्तामणि 12/36
2. यज्ञ मिमांसा– 306/1
3. यज्ञ मिमांसा– 306/3
4. यज्ञ मिमांसा– 308/1
5. यज्ञ मिमांसा– 289/2
6. यज्ञ मिमांसा– 289/3
7. यज्ञ मिमांसा– 289/4